
ज्वालामुखी योग - 24

अव्यक्त बापदादा :-

➡ _ ➡ अब समय प्रमाण सर्वस्नेही, सर्वश्रेष्ठ बच्चों से बापदादा और विशेष क्या चाहते हैं? वैसे तो पूरी सीजन में समय प्रति समय इशारे देते हैं। अब उन इशारों को प्रत्यक्ष रूप में आ रहा है। **स्नेही आत्मायें हो, सहयोगी आत्मायें हो। सेवाधारी आत्मायें भी हो। अभी महातपस्वी आत्मायें बनी।**

➡ _ ➡ अपने संगठित स्वरूप की तपस्या की रूहानी ज्वाला से सर्व आत्माओं को दुःख-अशान्ति से मुक्त करने का महान कार्य करने का **समय है।** जैसे एक तरफ खूने-नाहक खेल की लहर बढ़ती जा रही है, सर्व आत्मायें अपने को बेसहारे अनुभव कर रहीं हैं, ऐसे समय पर सभी सहारे की अनुभूति कराने के निमित्त आप महातपस्वी आत्मायें हो।

➡ _ ➡ चारों ओर इस तपस्वी स्वरूप द्वारा आत्माओं को रूहानी चैन अनुभव कराना है। **सारे विश्व की आत्मायें प्रकृति से, वायुमण्डल से, मनुष्य आत्माओं से, अपने मन के कमज़ोरियों से, तन से, बेचैन हैं। ऐसी आत्माओं को सुख-चैन की स्थिति का एक सेकण्ड भी अनुभव करायेंगे तो आपका दिल से बार-बार शुक्रिया मानेंगे।**

➡ _ ➡ वर्तमान समय संगठित रूप के ज्वाला स्वरूप की आवश्यकता है। अभी विधाता के बच्चे विधाता स्वरूप में स्थित रह, हर समय देते जाओ। **अखण्ड महान लंगर लगाओ। क्योंकि रॉयल भिखारी बहुत हैं। सिर्फ धन के भिखारी, भिखारी नहीं होते लेकिन मन के भिखारी अनेक प्रकार के हैं। अप्राप्त आत्मायें प्राप्ति के बूंद की प्यासी बहुत हैं।**

➡ _ ➡ इसलिए अभी संगठन में विधातापन की लहर फैलाओ। जो खजाने जमा किये हैं वह जितना मास्टर विधाता बन देते जायेंगे उतना भरता जायेगा। कितना सुना है। अभी करने का समय है। (07.04.1986)

➤ मन के रॉयल भिखारी आत्मा क्या क्या मांगते है ?

➡ _ ➡ शांति

➡ _ ➡ प्रेम

➡ _ ➡ सन्मान

➡ _ ➡ दया

➡ _ ➡ खुशी

➡ _ ➡ सहयोग

➡ _ ➡ स्नेह

➡ _ ➡ आर्शीर्वाद

➡ _ ➡ कृपा

➡ _ ➡ CARE

➡ _ ➡ प्रशंशा

➤➤ _ ➤➤ ATTENTION

➤➤ _ ➤➤ APPRECIATION

➤➤ _ ➤➤ ACKNOWLEDGEMENT

➤➤ _ ➤➤ कामनाये

➤➤ _ ➤➤ स्तुति

➤➤ _ ➤➤ ज्ञान

➤➤ _ ➤➤ समय

→ मन के भिखारी अनेक हैं

■ अप्राप्त आत्माएँ एक बूंद की प्यासी हैं

➤➤ _ ➤➤ त्यागी अर्थात् क्या ?

→ सोचती है करना है

→ समझती भी सब है

→ पर करने की हिम्मत नहीं है

➤➤ _ ➤➤ सर्वत्यागी अर्थात् क्या ?

→ मैं ज्ञानी तू आत्मा हु, योगी तू आत्मा हु

→ इस भान का भी त्याग

■ सर्व त्यागी महा त्यागी होंगे

■ जो प्राप्त खजाने हैं, उसे सबको बांटने वाले होंगे

➤➤ _ ➤➤ महात्यागी अर्थात् क्या ?

→ जिनमें हिम्मत भी है

→ और शक्ति भी है करने की..

➤➤ तप

➤➤ _ ➤➤ तप अर्थात् क्या ?

→ प्रकाश

→ महा प्रज्वलन

■ जो अग्नि और सूर्य में होता है

➤➤ _ ➤➤ 3 प्रकार के तप कौन कौन से हैं ?

→ शारीरिक तप

■ उसमें भी 3 हैं

▶ अहिंसा

▶ ब्रह्मचर्य

▶ सेवा

→ वाचिक तप

■ अर्थात् सत्य

- प्रिय
- मधुर
- सुखकारी वचन
- वाचिक तप में स्वाध्याय जुड़ा हुआ है
 - ▶ स्वाध्याय अर्थात ज्ञान अध्ययन करना

→ मानसिक तप

- मौन
 - ▶ मौन से गुजरने के बाद में ही पता चलता है की,
 - ▶ बोलना क्या है और क्या नहीं बोलना है
- आत्म संयम
- आत्म चिंतन
- आत्म शुद्धि

»_» गीता में और भी 3 तप का बताया हुआ है

→ सात्विक तप

- यह तप फल की कामना के बिना किया जाता है
 - ▶ यह तप आत्म शुद्धि के लिये किया जाता है
 - ▶ और कोई कामना नहीं है
 - ▶ केवल और केवल आत्म शुद्धि की ही कामना है
 - ▶ केवल मन के दोष समाप्त हो जाय यही कामना हो

→ राजसिक तप

- अर्थात प्रसिद्धि के लिये किया जाने वाला तप
 - ▶ इस तप में कामना की इच्छा रहती है
 - ▶ स्तुति, APPRICIATION, ATTENSION की कामना
 - ▶ संसार जाने, संसार प्रशंशा करे, दिखावा
 - ▶ इस कामना से किया जाने वाला तप
 - ▶ या इस कामना का थोडा सा भी अंश हो
 - ▶ इसे राजसिक तप कहा जाता है

→ तामसिक तप

- जिसमे स्वयं को भी कष्ट दिया जाय
 - ▶ और दूसरा कोई देखे तो उन्हें भी कष्ट हो ऐसा तप
- इस तप में व्यक्ति पंचाअग्नि में धुप में बैठता है
- और अपने शरीर को बहुत कष्ट देता है
- ऐसे उसे देखकर देखने वाले को भी पीड़ा हो यह तामसिक तप

»_» हमारा वास्तव में मन को शुद्ध करने का तप है

»_» इस अध्यात्म के जीवन में बहुत उचा जाना है तो

→ तपस्वी बनो, योगी बनो यह लक्ष्य रखो

■ यह अगर बन जाओ तो उसके पीछे सब कुछ आ जायेगा

► परंतु यह नहीं तो कुछ भी नहीं

»_» तपस्या के घटक / आधार

→ बिना मौन के तपस्या नहीं हो सकती

→ वह इरछाओ से मुक्त होगा

→ अंतर्मुखता

→ सम्पूर्ण साक्षी

→ कर्मेन्द्रियजीत

→ एकांत

→ आत्म अभिमानी स्थिति

→ अशरीरीपन

→ एकरस स्थिति

→ ब्रह्मा बाप समान बनना

→ सम्पूर्ण परमात्म प्रेम

→ वैराग्य

→ वाणी को जितना

→ स्वाद को जितना

→ निद्रा को जितना

■ अगर थोड़ा सा भी जीवन में दुःख है तो उसकी ट्रीटमेंट है की

► कही न कही अपवित्रता है

► श्रीमत का उलंगन हो रहा है

► उसको चेक करना है

»_» मन को इतना तपाना है, की वो गर्म हो जाय, लाल हो जाय

→ मन को तपाना पड़ेगा, जब तक लाल न हो जाय

■ और जब पूरा लाल हो जाय

► तब उसको ठीक ठाक करना पड़ेगा

► तब कही जाके वो सीधा होगा

■ और जब पूरा लाल हो जाय, बाद में हथोड़ा चाहिये

► तप की अग्नि चाहिये

► थोड़ा सा कष्ट सहन करना पड़ेगा

► वो वो चीजे करनी पड़ेगी, जो करने में थोड़ी वेदना हो

■ यह मन बहुत बिगडेल है

► जो बिना कष्ट दिए सुधरेगा नहीं

► भागता ही रहेगा

- ▶ उसे रोकने के लिये लगाम टाइट चाहिये
 - ▶ बहुत चाबुक लगानी पडती है
 - ▶ वह मानने के लिये तैयार ऐसे ही नहीं हो जाता है
-

➤➤ संयम

➤➤_ ➤➤ संयम अर्थात क्या ?

→ संयम अर्थात अपने से ही युद्ध

■ स्वयं के मन के विरुद्ध ही विद्रोह

- ▶ मन की धारणाये
 - ▶ मन की रुढीवादिताये
 - ▶ मन की जो भी बुरी आदते है, उन सबके विरुद्ध
 - ▶ विद्रोह अर्थात तप
 - ▶ अर्थात तपस्या
 - ▶ अर्थात मन को तपाना
 - ▶ अर्थात मन को लाल करना
 - ▶ और उसके बाद फिर हथोडा लगाना होता है..
 - ▶ धधकती हुई अग्नि में मन को पूरा तपाना है
 - ▶ उसके लिये पीड़ा सहन करनी पड़ेगी
 - ▶ सहज ज्ञान योग (महाकठोर है यह ज्ञान योग भी)
 - ▶ सहज तो कुछ भी होता ही नहीं है
 - ▶ पुरुषार्थ तो करना ही पड़ता है
-

➤➤ कौन सी 3 चीजो ने इस देह को संसार से जोड़ा है ?

➤➤_ ➤➤ स्पीच

➤➤_ ➤➤ भोजन

➤➤_ ➤➤ नींद

→ इन तीनों ने ही देह को संसार से बांधा है

→ महान योगी, महान तेजस्वी, महा पुरुषार्थी, महान तपस्वी जो होंगे

→ वो यह 3 चीजे धीरे धीरे कम करते जायेंगे उससे उपर उठ जायेगी

■ क्युकी यह 3 ही चीजे है

- ▶ जिसने हमे संसार से जोड़ा है

➤➤_ ➤➤ यदि विकर्मों का विनाश करना है तो

→ "अशरीरी बनो"
